CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library
S.D.P.B.
Coll. No. 939

Title Gāyatrī Sahastra-
nāma.

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No.: 939 Subject: Stotra.

Title: Gāyatrī Sahastranāma.

Author: – Scribe: Śivadatta.

Date of the work: – Date of the Ms.: V. S. 1954

Place of the work: – Place of the Ms.: Jīrṇaghada

Size: 7.2" by 3.8" Extent: 7 foll.

Language: Sanskrit Script: Devanāgarī

Remarks: –

॥श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगायत्र्यै नमः॥ अथ गायत्रीसहस्रनाम॥ श्री॥ ॐ अस्य श्रीगायत्रीस
हस्रनाममालामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः॥ अनुष्टुप् छंदः॥ देवीगायत्री देवता॥ हलो बीजं॥ स्वराः शक्तिः॥
अंगन्यासकरन्यासं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः॥ श्री॥ अथ ऋष्यादि न्यासः॥
ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि॥ ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमो मुखे॥ ॐ देवीगायत्री देवतायै नमो हृदये॥ ॐ ह
लो बीजाय नमो गुह्ये॥ ॐ स्वराः शक्तये नमो पादयोः॥ ॐ व्यंजनं कीलकाय नमो सर्वांगे व्यापके॥ मूर्ति
अथ ध्यानं॥ ॥ रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तैस्त्रिनेत्रैर्युतां रक्तां रक्ततरस्रजं मणिगणैर्युक्तां
कुमारीमिमां॥ गायत्रीं कमलासनां करतलैश्चक्रांकुशं पुष्पमालावराभयपद्मांबुजं कांचनवर्णसंस्थं वरदं धतीं
हंसाधिरूढां भजे॥ १॥ ॥ अथ मातृकान्यासः॥ ॥ ॐ अस्य श्रीमातृकामंत्रस्य प्रजापतिऋषिः॥
गायत्री छंदः॥ सरस्वती देवता॥ हलो बीजं॥ स्वराः शक्तिः॥ मातृकान्यासे विनियोगः॥ ॥ अथ ऋष्यादि
न्यासः॥ ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि॥ ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे॥ ॐ सरस्वती देवतायै नमः हृदये ॥१॥
ॐ हलो बीजाय नमो गुह्ये॥ ॐ स्वराः शक्तये नमः पादयोः॥ ॥ अथ करन्यासः॥ ॥ ॐ अं कं खं गं घं
ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ एं तं थं
दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः

४॥

करतलपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॥ अथ हृदयादिन्यासः॥ ॥ ॐ अं कं० ङं आं हृदयाय नमः॥ ॐ इं चं० ईं इति
शिरसे स्वाहा॥ ॐ उं टं० ऊं शिखायै वषट्॥ ॐ एं तं० ऐं कवचाय हुं॥ ॐ ओं पं० औं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ अं
यं० अः अस्त्राय फट्॥ श्री॥ ॥ श्रीनारद उवाच॥ ॥ भगवन् सर्वतो केशव शास्त्रार्थपारग॥ श्रुति
स्मृतिपुराणानां रहस्यं त्वन्मुखाच्छ्रुतं॥ १॥ सर्वपापहरं देव येन विद्या प्रवर्तते॥ केन वा ब्रह्मविज्ञा
नं किं नु वा मोक्षसाधनं॥ २॥ ब्राह्मणानां गतिः केन केन वा मृत्युनाशनं॥ ऐहिकामुष्मिकफलं केन वा
पद्मलोचन॥ ३॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण सर्वं निखिलमादितः॥ [illegible]
४॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच॥ ॥ साधु साधु महाप्राज्ञ सम्यक् पृष्टं त्वयानघ॥ शृणु वक्ष्यामि यत्नेन गायत्र्य
ष्टसहस्रकं॥ ५॥ सृष्ट्यादौ विष्णुना पूर्वं यदुक्तं तद्ब्रवीमि ते॥ प्रोक्तं चैव मया नैतन्न महिलौ परात्परं॥ ६॥
अष्टोत्तरसहस्रस्य अहमेव ऋषिः स्मृतः॥ छंदोनुष्टुप् तथा देवी गायत्री देवता स्मृता॥ ७॥ हलो बीजानि
तस्यैव स्वराः शक्तिरुदीरिता॥ क्लीं व्यंजनं कीलकं च विनियोगस्तु इति स्मृतः॥ ८॥ अंगन्यासकरन्यासमु
च्यते मातृकाक्षरैः॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितावहं॥ ९॥ ॥ रक्तश्वेतहिरण्य[illegible]
ध्यानं॥ १॥ ॥ अथ नाम॥ ॥ अचिंत्यलक्षणाव्यक्ताप्यर्थमातामहेश्वरी॥ अमृतार्णवमध्यस्था
स्था अपराचापराजिता॥ १०॥ अणिमादिगुणाधारा अर्कमंडलसंस्थिता॥ अजराजापराधर्मा

...त्ताम
हस्रनाम
॥२१॥

च अक्रूरत्नुधराधरा ॥११॥ अकारादिक्षकारांता अरिषड्वर्गभेदिनी ॥ अनाद्यप्रतिकाथा
अनंतानादिनिवासिनि ॥१२॥ अजितिश्चालयाविंत्या अरविंदनिभेक्षणा ॥ अंतर्वहिस्थितावि
द्या धूम्रिनी शांतरात्मिका ॥१३॥ अनाथाकुरुवाबाला अरविंदनिभानना ॥ अक्रमात्राऽथस्य
नंता अरिमंडलमर्द्दिनी ॥१४॥ अमूरघ्नी घमावास्या अलक्ष्मीघ्नी धनार्चिता ॥ आदिलक्ष्मी आदि
शक्तिः आकृतिश्चायतानना ॥१५॥ आदित्यपदवीचारा आदित्यपरिसेविता ॥ आर्यमकास
माचारा आम्रमूलनिवासिनी ॥१६॥ आग्नेयी चामरी चाद्या आराध्या चैव आसनस्थिता ॥ आचाम
निलयाधारा आकाशांतरवर्त्तिनी ॥१७॥ आद्यधूम्रसमापुक्ता आर्द्रा चाकाशरूपिणी ॥ आ
दित्यमंडलगता अरूमालाविभूषिणी ॥१८॥ इंदिरा चेष्टलिप्सा इंद्दिवरनिभेक्षणा ॥ इरावती मङ्गा
ती इंद्रपदाइंद्राणी वेंदुरूपिणी ॥१९॥ इक्षुकोदंडसंयुक्ता इषुसाधनकारिणी ॥ इंद्रनीलसमा ३
काराइडापिंगलरूपिणी ॥२०॥ इंद्राणी चेश्वरी देवी इहशत्रुप्रवर्जिता ॥ उमा चोषा उडुनिभा ॥२१॥
वहिरूकमालिनी ॥२१॥ उडुप्रभावो उमती उडुपा उडुमध्यगा ॥ ऊर्ध्वा चैवोर्ध्वकेशी च उर्ध्वाधःकपर
वर्जिता ॥२२॥ ऊनुगरा ऊर्ध्वमती ऋग्विद्ध ऋनमस्कृता ॥ ऋग्वेदरूपा ऋगतोयाऋषिमंडलधारिणी ॥ ऋ
ऋद्धिदा ऋजुमार्गस्था ऋजुधर्मा ऋतुप्रदा ॥ ऋग्वेदनिलयाऋज्वीलुप्तधर्मप्रवर्तिनी ॥२४॥ लृतावैव र
संभूता लृतादिविषहारिणी ॥ एकाक्षरी चैकमात्रा एका एकैकनिष्ठिका ॥२५॥ ऐंद्री ऐरावतारू

ढा ऐहिकामुष्मिकप्रदा ॥ ओंकारा चौषधीचौषधा ओतप्रोतनिवासिनी ॥२६॥ और्वा चौषधी संप
न्ना औपासनफलप्रदा ॥ अंडमध्यस्थिता देवी अःकारमनुरूपिणी ॥२७॥ कात्यायनी कालरात्रीकामा
क्षी कामसुंदरी ॥ कमला कामिनी कांता कामदा कालकंठिका ॥२८॥ कदंबविद्धमालाकारा कुंकुम
सनप्रिया ॥ कालकंठकाकरा कालिकाकालरूपिणी ॥२९॥ करिकुंभस्तनी कर्पूराकरवीरसुवा
सिनी ॥ कल्याणी चैव कुंडवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥३०॥ कुरुमनी घनराकांतिः कलाधारा कुमुद्व
ती ॥ कौशिकी कमलाधारा कामचारप्रभंजिनी ॥३१॥ कौमारी करुणापांगी ककुदंता करिप्रि
या ॥ केसरी केशवनुता कदंबकुसुमप्रिया ॥३२॥ कुमारी कुंडनिलया किराती कृरिवाहना ॥ केके
यी कोकिलालापा केतकी कुसुमप्रिया ॥३३॥ कालिंदी कालिकी कांची कलशोद्भवसंस्तुता ॥ काममा
ता क्रतुमतिः कामरूपा कृपावती ॥३४॥ कमंडलुधरा कूरा कर्मनिर्मूलकारिणी ॥ कुंजहंसगतिः कौ
तुकाः तकौतुकमंगला ॥३५॥ कस्तूरीतिलका कंची करींद्रगमना कुहुः ॥ कर्पूरलेपना कृष्णा क
पिला कुहराश्रया ॥३६॥ कूटस्था कुधरा कम्रा कुक्षिस्था खिलविग्रहा ॥ खड्गखेटधरा खर्व
खेचरी खगवाहना ॥३७॥ खट्वांगधारिणी ख्याता खगराजोपरि स्थिता ॥ खलघ्नी खंडित
जरा खंडाख्यानप्रदायिनी ॥३८॥ खंडेंदुतिलका गंगा गणेशगुहपूजिता ॥ गायत्री गोमती गी

गायत्रीसह
स्रनाम ॥
॥ ३ ॥

ना गांधारी गानलोलुपा ॥ ३९ ॥ गौतमी गामिनी गाधा गंधर्वाप्सरसेविता ॥ गोविंदचरणाक्रांता
गुणत्रयविभाविता ॥ ४० ॥ गंधर्वी गह्वरी गोत्रा गिरिशा गहना गमी ॥ गुहावासा गुणवती गुरुपा
पप्रणाशिनी ॥ ४१ ॥ गुर्वी गुणवती गुह्या गोप्तव्या गुणदायिनी ॥ गिरिजा गुह्यमातंगी गरुडध्व
जवल्लभा ॥ ४२ ॥ गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्था गदाधरा ॥ गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमंडलव
र्तिनी ॥ ४३ ॥ घर्मदा घनदा घंटा घोरदानवमर्दिनी ॥ घृणिमंत्रमयी घोषा घनसंपातदायिनी ॥
४४ ॥ घंटारवप्रिया घ्राणा घृणिसंतुष्टकारिणी ॥ घनारिमंडला घूर्णा घृताची घनवेगिनी ॥
४५ ॥ ज्ञानधातुमयी चर्चा चर्चिता चारुहासिनी ॥ चटुला चंडिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषणा ॥
४६ ॥ चतुर्भुजा चारुदंता चातुरी चरितप्रदा ॥ चूलिका चित्रवस्त्रांता चंद्रमाः कर्णकुंडला ॥ ४७ ॥ चं
द्रहासा चारुदात्री चकोरी चंद्रहासिनी ॥ चंद्रिका चंद्रधात्री च चौरी चौरा च चंडिका ॥ ४८ ॥ चंचद्वाग्वादि
नी चंद्रचूडा चोरविनाशिनी ॥ चारुचंदनलिप्तांगी चंचच्चामरवीजिता ॥ ४९ ॥ चारुमध्या चारुगतिः ॥ ३ ॥
चंडिका चंद्ररूपिणी ॥ चारुहोमप्रिया चार्वाचरिता चक्रबाहुका ॥ ५० ॥ चंद्रमंडलमध्यस्था चंद्रमंड
लदर्पणा ॥ चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी ॥ ५१ ॥ चित्स्वरूपा चंद्रमाता चंद्रमाश्चंदनप्रि
या ॥ चोदयित्री चिरप्रज्ञा चातका चारुहेतुकी ॥ ५२ ॥ छत्रयाता छत्रधरा छाया छंदःपरिच्छदा ॥
छायादेवी छिद्रनखा छिन्नेंद्रिया विसर्पिणी ॥ ५३ ॥ छंदोनुष्टुप्प्रतिष्ठांता छिद्रोपद्रवभेदिनी ॥ छेदा छ

त्रेश्वरी छिन्ना छेदिका छेदनक्रिया ॥ ५४ ॥ जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी ॥ जाह्नवी जटिला जेत्री जरा
मरणवर्जिता ॥ ५५ ॥ जंबूद्वीपवती ज्वाला जयंती जलशालिनी ॥ जितेंद्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया ॥
५६ ॥ जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा ॥ जनित्री जह्नुतनया जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ५७ ॥ ज्वालामुखी ज
पवती ज्वरघ्नी जितविष्टपा ॥ जिताक्रांतमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता ॥ ५८ ॥ ज्वलंती जलदा ज्येष्ठा ज्याघो
स्फोटदिङ्मुखा ॥ जंभिनी जृंभिणी जृंभा ज्वलन्माणिक्यकुंडला ॥ ५९ ॥ झिंझिका गणनिर्घोषा झंझामारुत
वेगिनी ॥ झल्लरीवाद्यकुशला ञरूपा ञभुजा स्मृता ॥ ६० ॥ टंकबाणसमायुक्ता टंकिनी टंकभेदिनी ॥ टंकीग
णकृताघोषा टंकनीयमहारसा ॥ ६१ ॥ टंकारकारिणी देवी ठठशब्दनिनादिनी ॥ डामरी डाकिनी डिंभा डुं
डमारैकनिर्जिता ॥ ६२ ॥ डामरीतंत्रमार्गस्था डमड्डमरुनादिनी ॥ डिंडीरवसहा डिंभलसत्क्रीडापरायणा ॥
६३ ॥ ढुंढिविघ्नेशजननी ढक्काहस्ता ढिलिव्रजा ॥ नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदा नदी ॥ त्रिगुणा त्रिपदा
तंत्री तुलसी तुरगासना ॥ त्रिविक्रमपदाक्रांता तुरीयपदगामिनी ॥ ६५ ॥ तरुणादित्यसंकाशा तामसी तुहिना तुरा
त्रिकालज्ञानसंपन्ना त्रिवली च त्रिलोचना ॥ ६६ ॥ त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुंगा तुरंगवदना तथा ॥ तिमिंगिलगिला तीव्रा
त्रिस्रोता तामसादिनी ॥ ६७ ॥ तंत्रमंत्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा ॥ त्रिसंध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था ताल
प्रतापिनी ॥ ६८ ॥ ताटंकिनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ॥ तंतुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया ॥ ति
लहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ॥ तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपरिवारिता ॥ ७० ॥ तलोदरी तिलाभा

धयास
हस्रनाम
५

वातोटंकपरिशोभिता ।। त्रिकलानित्रिशीतस्मा त्रिविधा तरुणाकृती ।।७१।। तेजःकांचनसंकाशा तप्तकांचन
नूवर्णा ।। त्रिपंचकान्तिवर्णा त्रिकालज्ञानदायिनी ।।७२।। तपनी तापहन्त्री तातामसी नवरत्नता ।। ना
दूर्वेषा त्रिगुणा कालरात्रि आगमनुवुध्नेश्वरी ।।७३।। धूकारी धूरिणी धात्री ताडीहिना दीनवत्सला ।। दानवान्तक
री दुर्गा दुर्गाहरनिवारिणी ।।७४।। देवदेवतामाता डींपडीदुंदुभिस्वना ।। देवयाना दुरावासा दरिद्रछेदिनी
हि देवा ।।७५।। दामोदरप्रियादात्री दामोदरी देवदूतिका ।। द्विकारदमनि जयादेवता दित्यरूपिणी ।।७६।। दे
ववध्यादिविघ्नहेचिला दानवान्तकि ।। दीनाथिना दत्ताहा श्रीवासा देवमोहिनी ।।७७।। धात्री धनुर्धरा धे
नुधारिणी धर्मचारिणी ।। धुरंधरा धराधारा धनदा धान्यदोहिनी ।।७८।। धर्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेद
विशारदा ।। धृतिर्धन्या धृवपदा धर्मराजप्रिया ध्रुवा ।।७९।। धूमावती धूम्रकेशी धर्मशास्त्रप्रकाशिनी ।।
नदानंदप्रिया निद्रा नृनुता नन्दनात्मिका ।।८०।। नर्मदा नलिनी नीला नीलकण्ठसमाश्रया ।। नारायणप्रियानि
त्यानिर्मला निर्गुणा निधिः ।।८१।। निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरंजना ।। नादानादप्रियाना
दाबिंदुकलात्मिका ।।८२।। नारसिंही नगधरा नृपवैरा नागवेष्टिता ।। नरकक्लेशशमनी नारायणपदो
द्भवा ।।८३।। निरविघ्ना निराकारा नारदप्रियकारिणी ।। नदनवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी ।।८४।। नाम ।।४।।
८५ ।। नवकूलवधराना ।। नीलिरूपा वुकारिणी ।। नवनीतप्रियानारी नीलजीमूतनिःस्वना ।। निमेषिणी नदी
मोतिप्रियाख्याता निधिदा निर्मलात्मिका ।। नवनीतप्रिया नारी नागलोकनिवासिनी ।। नवकांबुनदप्रख्या
कूपा नीलग्रीवा नरेश्वरी ।।८६।। नामावली निशुंभघ्नी नागलोकनिवासिनी

नागलोकाधिदेवता ।।८७।। नूपुराक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी ।। निमग्नरक्तनयना निर्घातसमनि
स्वना ।।८८।। नंदनोद्याननिलया निर्व्यूहोपरिचारिणी ।। पार्वती परमोदारा पंचब्रह्मात्मिका परा ।।८९।। पं
चकोशविनिर्मुक्ता पंचपातकनाशिनी ।। परचित्तविधानज्ञा पंचिकापंचरूपिणी ।।९०।। पूर्णिमा परमा प्रीतिः
परतेजःप्रकाशिनी ।। पुराणी पौरुषी पुण्या पुंडरीकनिभेक्षणा ।।९१।। पातालतलनिर्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्द्धि
नी ।। पावनी पदनीहारी पेशला पापशासनी ।।९२।। प्रजापतिपरिश्रान्ता पर्वतस्तनमंडला ।। पद्मप्रिया प
द्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसंभवा ।।९३।। पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी ।। पशुपाशविनिर्मुक्ता पुरंध्री पु
रवासिनी ।।९४।। पतिव्रता पवित्रांगी पुष्पहासपरायणा ।। पुष्कलापरुषा पापवृष्टिरेता नुमतिप्रिया ।।९५।।
प्रज्ञावतीसुता पौत्री पुत्रपूज्या पयस्विनी ।। पट्टिपाशधरा पंक्तिः पितृलोकप्रदायिनी ।।९६।। पुराणी पुण्यशी
लाच प्रणतार्तिविनाशिनी ।। प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामहपरिग्रहा ।।९७।। पुंडरीकपुरावासा पुंडरीकनिभा
नना ।। पृथुजंघा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी ।।९८।। प्रवालशोभा पिंगाक्षी पीतवासाः प्रचापला ।। प्रसवा
पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्राणदा गतिः ।।९९।। पंचवर्णा पंचवाणी पंचिका पंजरस्थिता ।। परमाया परंज्योतिः प
रप्रीतिः परागतिः ।।१००।। पराकाष्ठा परेशानी पावनी पावकद्युतिः ।। पुण्यभद्रा परिच्छेद्या पुष्पहासा पृथूद
रा ।।१०१।। पीतांगी पीतवसना पीतशय्या पिशाचिनी ।। पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया ।।१०२।। प
ञ्चमप्रियापारा पूतनाप्राणघातिनी ।। पुंनागवनमध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता ।।१०३।। पंचांगा च परा श

गायत्री सहस्रनाम ५

क्तिः परमाह्लादकारिणी ॥ पुष्पकान्विता पूषा पोषिताखिलविष्टपा ॥८४॥ पानप्रिया पंचशिखा पन्नगोपरि
शायिनी ॥ पद्मसामुद्रिका पृथ्वी पार्थिवी पृथुदोहिनी ॥८५॥ पुराणन्यायमीमांसा पाटली पुष्पगंधिनी ॥ पुण्यप्रजा
पारसीका परमार्गैकगोचरा ॥८६॥ प्रवालशोभा पूर्णाशा प्रणवा पल्लवोदरी ॥ फलिनी फलदा फल्गुः फूत्कारी
फलकाकृतिः ॥८७॥ फणीन्द्रभोगशयना फणिमंडलमंडिता ॥ बालबाला बहुमता बालातपनिभांशुका ॥
बलभद्रप्रिया वंद्या बडवा बुधसंस्तुता ॥ बंदीदेवी बिलवती बडिशघ्नी बलिप्रिया ॥ बांधवी बोधिता बु
द्धिर्बंधूककुसुमप्रिया ॥ बालभानुप्रभाकारा ब्राह्मी ब्राह्मणदेवता ॥९१॥ बृहस्पतिस्तुता वृंदा वृंदावन
७ विहारिणी ॥ बलाकिनी बिलाहारा बिलवासा बहूदका ॥९२॥ बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका ॥
बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी ॥९३॥ बिंदुनादकलातीता बिंदुनादस्वरूपिणी ॥ बद्धगोधांगु
लित्राणा बदर्याश्रमवासिनी ॥९४॥ बृंदारका बृहत्स्कंधा बृहती बाणपातिनी ॥ बृंदाध्यक्षा बहुनुता ब
निता बहुविक्रमा ॥९५॥ बद्धपद्मासनासीना बिल्वपत्रतलस्थिता ॥ बोधिद्रुमनिजावासा बडिस्था बिंदु
दर्पणा ॥९६॥ बालबाणासनवती बडवानलवेगिनी ॥ ब्रह्मांडबहिरंतस्था ब्रह्मकंकणसूत्रिणी ॥९७॥ भ ॥५॥
वानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ॥ भद्रकाली भुजंगाक्षी भारती भारताशया ॥९८॥ भैरवी भु
वनाकारी भुक्तिदा भगमालिनी ॥ भोगिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा ॥९९॥ भूतवासा भृगुल
ता भार्गवी भूसुरार्चिता ॥ भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा ॥१००॥ भामिनी भोगिनी भाषा

भाविणी भूरिदक्षिणा ॥ भर्गात्मिका भीमवती भवबंधनमोचनी ॥१०१॥ भजनीया भूतधा
त्रीरंजिता भुवनेश्वरी ॥ भुजंगवलया भीमा भेरुंडा भागधायिनी ॥१०२॥ माता माया मधुमती
मधुजिह्वा मधुप्रिया ॥ महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना ॥१०३॥ मायातीता मधुमती मधुमांस
मधुद्रवा ॥ मानवी मधुसंभूता मिथिलापुरवासिनी ॥१०४॥ मधुकैटभसंहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी ॥
मंदोदरी महामाया मैथिली मुरलासिनी ॥१०५॥ महालक्ष्मी महाकाली महाकन्या महेश्वरी ॥ माहे
न्द्री मेरुतनया मंदारकुसुमार्चिता ॥१०६॥ मंजुमंजीरचरणा मोक्षदा मंजुभाषिणी ॥ मधुरद्रा
विणी मुद्रा मत्तमातंगगामिनी ॥१०७॥ मेधा मरकतश्यामा मागधी मेनकात्मजा ॥ महा
मारी महावीरा महाश्यामा मनुस्तुता ॥१०८॥ मातृका मिहिराभासा मुकुंदपदविक्रमा ॥ मूला
धारस्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी ॥१०९॥ मृगाक्षी महिषारूढा महिषासुरमर्दिनी ॥ यो
गासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया ॥११०॥ यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी ॥
यक्षिणी योगयुक्ता यक्षराजप्रसूतिनी ॥१११॥ यात्रा यानविधानज्ञा यदुवंशसमुद्भवा ॥ यका
रादिहकारांता याजुषी यानमालिनी ॥११२॥ यामिनी योगनिरता यातुधानभयंकरी ॥ रुक्मि

णी रमणी रामा रेवती रेणुका रतिः ॥३३॥ रौद्री रौद्रप्रियाकारा राममाता रतिप्रिया ॥ रो
हिणी राज्यदा रेवा रमा राजीवलोचना ॥३४॥ राकेशी रूपसंपन्ना रत्नसिंहासनस्थिता ॥ र
क्तमाल्यांबरधरा रक्तगंधानुलेपना ॥३५॥ राजहंससमारूढा रंभा रक्तबलिप्रिया ॥ रमणी
ययुगाधारा राजिताखिलभूतला ॥३६॥ रुरुचर्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका ॥ रोगे
शी रोगशमनी राविणी रोमहर्षिणी ॥३७॥ रामचंद्रपदाक्रांता रावणच्छेदकारिणी ॥ र
त्नवस्त्रपरिच्छिन्ना रथस्था रुक्मभूषणा ॥३८॥ लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिंगधारिणी ॥
लक्ष्मीर्लोला लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता ॥३९॥ लज्जा लंबोदरी देवी ललना लोकधारिणी ॥ वर
दा वंदिता विद्या वैष्णवी विमलाकृतिः ॥४०॥ वाराही विरजा वर्षा वरलक्ष्मीर्विलासिनी ॥ विनता व्यो
ममध्यस्था विष्णुरूपा विधिप्रिया ॥४१॥ वारुणी वेणुसंभूता वीतिहोत्रा विरूपिणी ॥ वायुमंडल
मध्यस्था वारिजासनसंस्थिता ॥४२॥ विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुंधरा ॥ वामदेवप्रिया वेला ॥६॥
वज्रिणी वसुदोहिनी ॥४३॥ वेदाक्षरपरीतांगी वाजपेयफलप्रदा ॥ वासवी वामजननी वैकुंठनिलया वरा ॥
॥४४॥ व्यासप्रिया वर्मधरा वाल्मीकिपरसेविता ॥ शाकंभरी शिवा शांता शारदा शरणागतिः ॥४५॥ शा
तोदरी शुभाचारा शुंभासुरविमर्दिनी ॥ शोभावती शिवाकारा शंकरार्धशरीरिणी ॥४६॥ शोणा शुभाशया
शरभा शूलिनी शुद्धा शबरी शुकवाहिनी ॥ श्रीमती श्रीधरानंदा श्रवणानंददायिनी ॥

शुभ्रा शिरःसंधानकारिणी ॥ शरावती शरानंदा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना ॥४८॥ शर्वाणी शांबरी
वंद्या षड्भाषा षडृतुक्रमा ॥ षडाधारस्थिता देवी षण्मुखप्रियकारिणी ॥४९॥ षडंगरूपा सुमती
सुरासुरनमस्कृता ॥ सरस्वती सदाधारा सर्वमंगलकारिणी ॥५०॥ सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसं
भवा ॥ सर्वावासा सदानंदा सुस्तनी सागरांबरा ॥५१॥ सर्वैश्वर्यप्रदा सिद्धा साधुबंधपदक्रमा ॥ सुषुप्त
वस्था सुरनो सूर्यमंडलमध्यगा ॥५२॥ सप्तर्षिमंडलगता सोममंडलवासिनी ॥ सर्वज्ञा सर्वेश नया सुके
शी समेसहतिः ॥५३॥ हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी ॥ क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितनया
क्षमा ॥५४॥ गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती ॥ वेदगर्भा वरारोहा तोषयामि पुनः पुनः ॥५५॥
त्रसंख्यानि नामानि गायत्र्याः शोदितानि ते ॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु पठितव्यं द्विजैः सदा ॥५६॥ जपेत्
होमस्तु पंचस्वा विशेषतः ॥ यस्मै कस्मै न वक्तव्यं गायत्र्याश्च सहस्रकं ॥५७॥ सुभक्ताय सुशिष्याय व
क्तव्यं भूसुराय वै ॥ भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बांधवेभ्यो न दर्शयेत् ॥५८॥ यद्गृहे विद्यते यंत्रे लिखितं स्तोत्र
मुत्तमं ॥ चंचलापि स्थिरा लक्ष्मीः कमला तत्र तिष्ठति ॥५९॥ इदं रहस्यं परमं गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ मया ते
कथितं नान्यस्य न प्रकाश्यं न कस्यचित् ॥६०॥ इदं यः पठते नित्यं स स्यात्तत्परमानसः ॥ ब्रह्महत्यासु
रापानसुवर्णस्तेयिनो नराः ॥६१॥ रोगी मुच्येत रोगाद्वै बद्धो मुच्येत बंधनात् ॥ पुत्रप्रदं मनुष्याणां दरि
द्राणां धनप्रदं ॥६२॥ मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदं ॥ गुरुतल्पगतो वापि पठनान्मुच्यते सकृत् ॥६३॥

म॰गा॰यत्रीस॰
हस्रनामप॰
७

इदंरहस्यममलंमयोक्तमृषिसत्तम॥पठनाद्ब्रह्मसायुज्यंप्राप्नुवंतिनसंशयः॥१६४॥मुक्ताविद्रुम
हेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटांतत्वात्मवर्णात्मिकां॥गायत्रींवर
दाभयांकुशाकशांशुभ्रंकपालंगुणंशंखंचक्रमथारविंदयुगलंहस्तैर्वहंतींभजे॥१६५॥ श्री॥
इतिश्रीविष्णुयामलेसृष्टिप्रशंसायांब्रह्मविष्णुसंवादेनारदंप्रतिब्रह्मोक्तंगायत्रीसहस्रनाम
स्तोत्रंसंपूर्णं॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥संवत्१७१९प्रवर्षेशाके१५८२प्रवर्त्तमा
नेमाघवदि८रवौदिनेजीर्णघडमध्येश्रीदेवसुतशिवदत्तेनलिखितंस्वकार्यार्थं॥
॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥श्रीरस्तु॥श्री॥॥७॥